बालटी के अन्दर समन्दर

कहानी: अवेहि-अवकस

एकलव्य

बालटी के अन्दर समन्दर

कहानी: अवेहि-अबकस

चित्र: दीपा बलसावर ..... डिज़ाइन: प्रीति राजवाड़े

..... एकलव्य का प्रकाशन

एकलव्य

दीपा बलसावर लेखिका और चित्रकार हैं। वे पिछले 25 वर्षों से विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के साथ कार्य कर रही हैं।

प्रीति राजवाड़े ग्राफिक डिज़ाइनर हैं और बैंगलोर में रहकर काम करती हैं। एक नन्ही बच्ची की माँ होने के नाते, इन दिनों, बच्चों के लिए शैक्षिक सामग्री की डिज़ाइन की ओर उनका झुकाव बढ़ा है।

बालटी के अन्दर समन्दर

BALTI KE ANDAR SAMANDAR

कहानी: अवेहि-अबकस
चित्र: दीपा बलसावर
डिज़ाइन: प्रीति राजवाड़े
अँग्रेज़ी से अनुवाद: दीपाली शुक्ला

जुलाई 2013 / 3000 प्रतियाँ
अक्तूबर 2015 / 3000 प्रतियाँ
© अवेहि-अबकस, मुम्बई www.avehi-abacus.org
कागज़: 100 gsm मेपलिथो और 300 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट एवं नवजबाई रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
ISBN: 978-93-81300-69-5
मूल्य: ₹ 50.00

प्रकाशक: **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन: (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल, फोन: (0755) 268 7589

इस किताब में उपयोग किया गया 100 gsm कागज़ नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

यह सोनू है।

यह है सोनू की बालटी।

और यह है नल
जो लाता है पानी
और भरता है
सोनू की बालटी को।

यह है पाइप
जिसमें चलता है पानी
जो नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

यह है झील

जिसका ठहरा शान्त पानी
पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

यह है नदी

जो मिल जाती है झील में
जिसका ठहरा शान्त पानी
पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

ये हैं पहाड़

जहाँ से बहती है नदी
जो मिल जाती है झील में
जिसका ठहरा शान्त पानी
पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

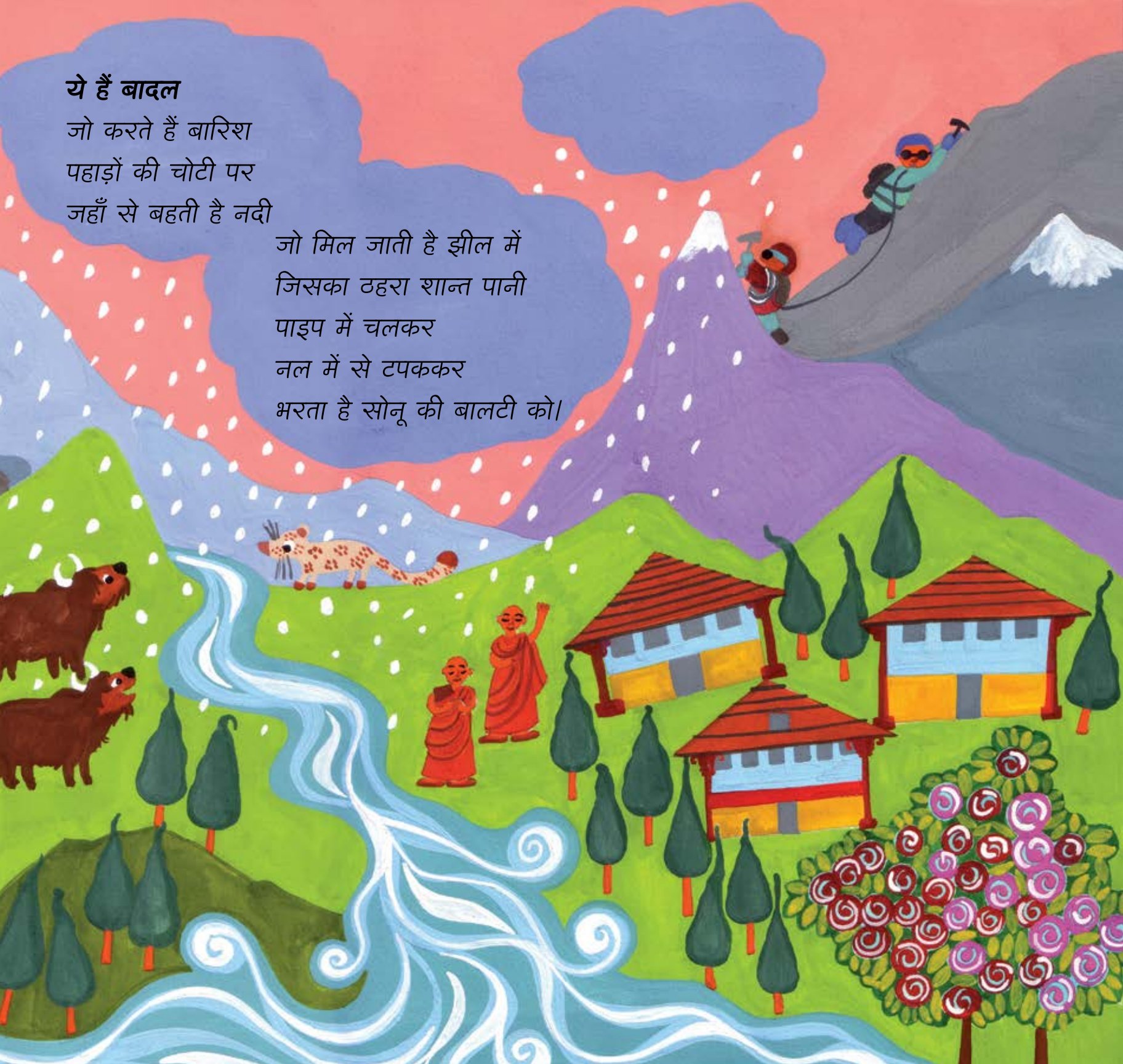
ये हैं बादल
जो करते हैं बारिश
पहाड़ों की चोटी पर
जहाँ से बहती है नदी
जो मिल जाती है झील में
जिसका ठहरा शान्त पानी
पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

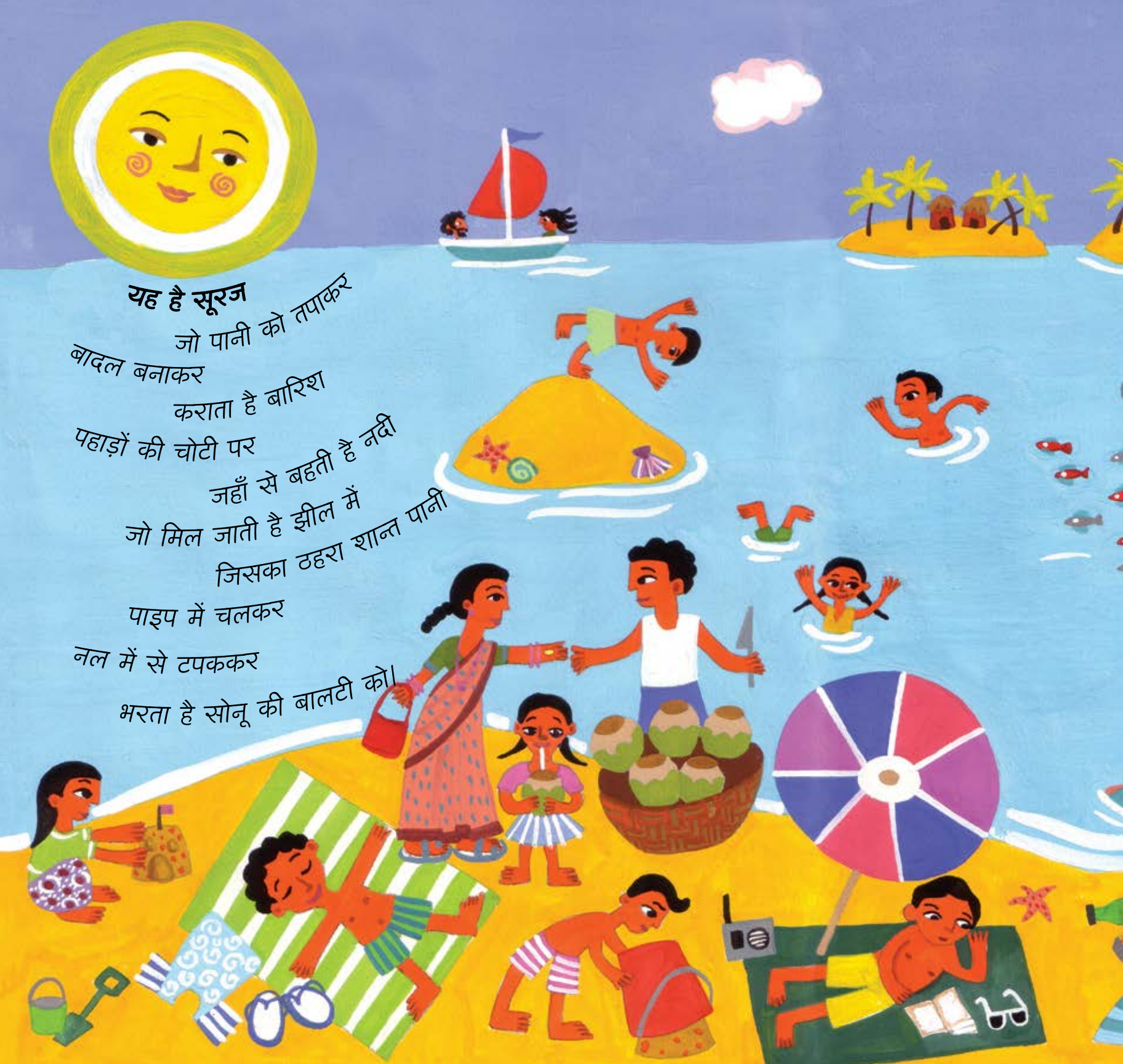

यह है सूरज

जो पानी को तपाकर
बादल बनाकर
कराता है बारिश
पहाड़ों की चोटी पर
जहाँ से बहती है नदी
जो मिल जाती है झील में
जिसका ठहरा शान्त पानी
पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

यह है समन्दर,
गहरा नीला समन्दर,
जो सूरज के ताप से
बन जाता है बादल
जो करते हैं बारिश
पहाड़ों की चोटी पर
जहाँ से बहती है नदी
जो मिल जाती है झील में
जिसका ठहरा शान्त पानी
पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

फिर क्या होता है?

सोनू के नहाने के बाद
पानी...
रिस जाता है ज़मीन में
जा मिलता है समन्दर से
और सूरज के ताप से
बन जाता है बादल
करता है बारिश
पहाड़ों की चोटी पर
बहता है नदी बनकर
ठहर जाता है झील में
फिर पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है बालटी... किसी और की।

सोनू तैयार था पानी भरने के लिएः मगर झील किनारे से, नदी के संग-संग, पहाड़ों पर चढ़ते और समन्दर में गोते लगाते वह चल पड़ा पानी के सफर पर।

लुभावने चित्रों और आखिर में छिपे एक तोहफे वाली यह किताब हमारे आसपास की चीज़ों के बीच के गहरे रिश्तों की ओर हमारा ध्यान दिलाती है। छोटे से छोटों और बूढ़ों से भी बड़ों के लिए पेश है पानी की यह कहानी।

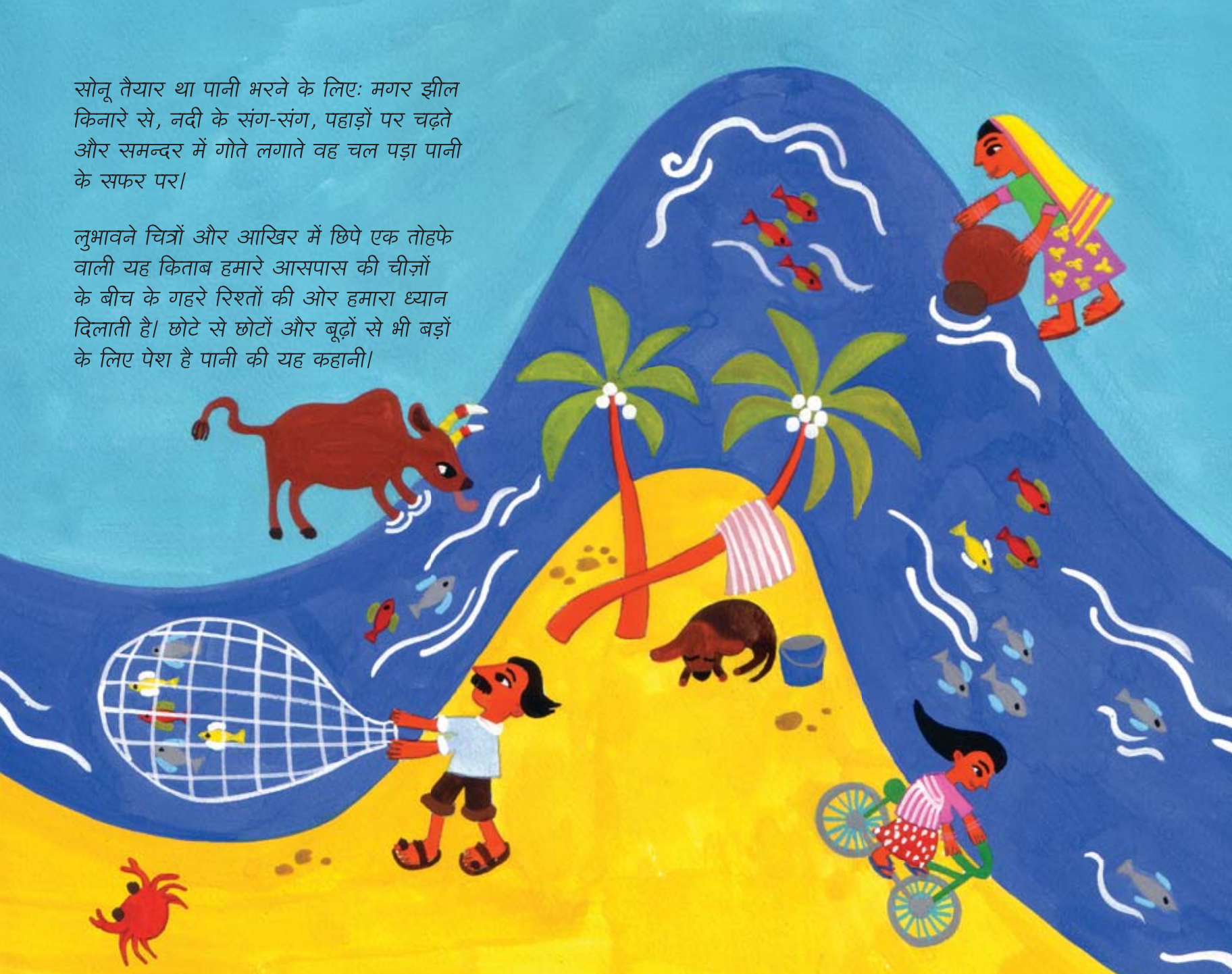

ISBN: 978-93-81300-69-5

9 789381 300695

एकलव्य

मूल्यः ₹ 45.00

A1208H

parag SRTT & NRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित